गरीब लड़का, अमीर लड़का

क्लाइड रॉबर्ट बुल्ला

चित्र: मार्सिया सेवल

कोको एक अनाथ था जिसके माता-पिता युद्ध में मारे गए थे. युद्ध के अंत में एक सैनिक कोको को शहर ले गया. वहां लड़के की देखभाल रोजा नाम की एक गरीब दयालु महिला ने की. रोजा एक बेकरी में काम करती थी. जब कोको थोड़ा बड़ा हुआ तो वो भी रोजा की मदद करने लगा.

फिर, एक दिन एक आदमी आया जिसने कहा कि वो कोको का चाचा था. वो कोको को गांव के एक घर में ले गया और उसे बहुत सारी अच्छी चीजें दीं ... लेकिन क्या कोको वास्तव में वो चीज चाहता था?

क्लाइड रॉबर्ट बुल्ला ने एक लड़के की गर्म और संवेदनशील कहानी लिखी है जो एक दिन गरीब होता है और अगले दिन अमीर बन जाता है. यह कहानी युवा पाठकों को ज़रूर पसंद आएगी. मर्सिया सीवेल के सुन्दर चित्र इस लोक-कथा में चार चाँद लगा देते हैं.

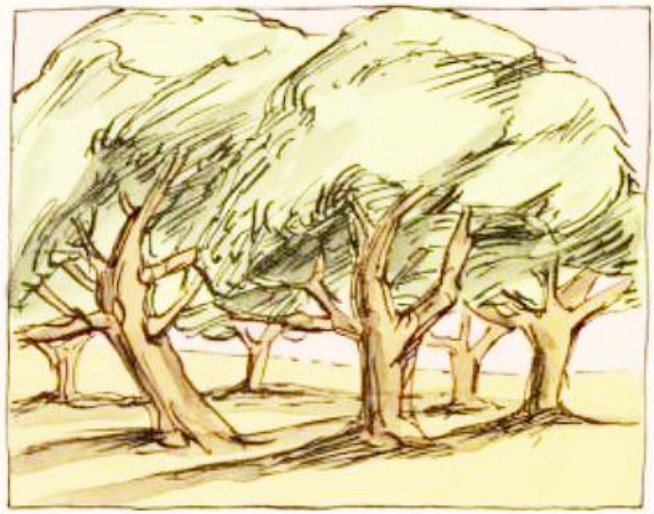

गरीब लड़का, अमीर लड़का

क्लाइड रॉबर्ट बुल्ला

चित्र: मार्सिया सेवल

एक दिन कोको नाम का लड़का गरीब था.

अगले दिन वो अमीर बन गया.

और वो सबकुछ ऐसे हुआ.

युद्ध ख़त्म होने से ठीक पहले एक सैनिक ने कोको को, सड़क के किनारे पड़ा पाया.

कोको तब एक छोटा बच्चा था.

सैनिक उसे शहर ले गया.

"मैं इस बच्चे को अपने साथ नहीं रख सकता," सैनिक ने कहा. "मैं उसके साथ भला क्या करूँगा?"

एक महिला ने बच्चे की उंगली में सोने की अंगूठी देखी.

"मैं उसे ले जाऊँगी," महिला ने कहा. और फिर सिपाही ने कोको को उस महिला के पास छोड़ दिया.

महिला का नाम रोज़ा था.

उसकी नजर बच्चे की उंगली में सोने की अंगूठी पर पड़ी.

अंगूठी पर एक नाम गढ़ा था.

"कोको," उसने कहा. "अच्छा, तो तुम कोको हो."

रोज़ा ने अंगूठी निकाल कर बेच दी.

उन पैसों से उसने अपने और बच्चे के लिए खाना खरीदा.

फिर रोज़ा, कोको को अपने घर ले गई.

उसका घर बमबारी से काफी नष्ट हो गया था.

घर में बहुत कुछ नहीं बचा था.

लेकिन फिर भी एक कमरे का हिस्सा कुछ ठीक-ठाक था.

वहां उसके पास भोजन और बिस्तर था.

युद्ध के बाद,

रोज़ा एक बेकरी में काम करने लगी.

जब कोको थोड़ा बड़ा हुआ, तो उसने भी बेकरी में काम किया.

कोको दुकान की सफाई करता था.

कोको डबलरोटी सेंकने में मदद करता था.

रोज़ा ने कहा, "हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी, क्योंकि हम बहुत गरीब हैं."

रोज़ा ने कहा, "हमें पता नहीं, पर शायद तुम्हारे माता-पिता कहीं जीवित हों."

"किसी दिन वे तुम्हें ढूंढ सकते हैं और तुम्हें कहीं दूर ले जा सकते हैं. इसलिए तुम देखो कि तुम्हें मेरे पास कैसा लगता है. मुझे तुम्हारी बहुत ज्यादा परवाह नहीं करनी चाहिए. और तुम्हें भी मेरी बहुत अधिक परवाह नहीं करनी चाहिए."

फिर एक दिन एक आदमी दुकान पर आया.

उसने रोज़ा से कहा, “मुझे बताया गया है कि आपके यहाँ एक लड़का है. मुझे बताया गया था कि आप उसके माता-पिता को तलाश रही हैं."

"यह सच है," रोज़ा ने कहा.

"मुझे यह भी बताया गया था कि लड़के की उंगली में एक अंगूठी थी," आदमी ने कहा.

"क्या उस अंगूठी पर कोई नाम था?"

"हाँ," रोज़ा ने कहा.

"क्या नाम... " आदमी ने पूछा.

"क्या कोको था?"

"अंगूठी पर कोको लिखा था," रोज़ा ने कहा.

"मैंने ही उसे वो अंगूठी दी थी!" आदमी ने कहा.

"क्या आप, उसके पिता हैं?" रोज़ा ने पूछा.

"नहीं, उसके पिता और माता युद्ध में मारे गए थे," आदमी ने कहा.

"मैं उसका चाचा पॉल हूं."

रोज़ा ने कोको को दुकान में बुलाया.

"यह तुम्हारे चाचा हैं," रोज़ा ने कहा.

उस आदमी ने कोको को अपनी बाँहों में उठा लिया.

"कोको! कोको!" उसने बार-बार कहा.

"देखो, मैं बिल्कुल अकेला था. अब तुम मेरे पास हो. और मैं, तुम्हारे पास हूँ."

उस आदमी ने रोज़ा से कहा. "तुमने मेरे कोको की देखभाल की. तुम कितनी अच्छी हो!"

"मुझे आपको एक बात बतानी चाहिए," रोज़ा ने कहा.

"मैंने कोको की अंगूठी बेच दी थी, क्योंकि हम बहुत भूखे थे."

"अब तुम लोग फिर कभी भूखे नहीं रहोगे," उस आदमी ने कहा.

"तुम्हारे पास खूब पैसा होगा ..."

"मुझे कुछ नहीं चाहिए," रोज़ा ने कहा.

"आप चाहें तो लड़के को अपने साथ लेकर जा सकते हैं."

उस आदमी ने कोको को एक लंबी, चमकीली कार में बिठाया.

फिर वे एक-साथ चले गए.

वे एक दूर के गांव में गए.

वसंत का मौसम था.

आसपास हरे-भरे खेत थे.

पेड़ों में पक्षियों के घोंसले थे.

कोको ने सबकुछ बड़े ध्यान से देखा.

"क्या तुम्हें यहां अच्छा लग रहा है?" आदमी ने पूछा.

"हाँ, सर," कोको ने कहा.

"मुझे सर मत बुलाओ," उस आदमी ने कहा.

“मैं तुम्हारा चाचा पॉल हूं. मुझे वही बुलाना."

"चाचा पॉल," कोको ने कहा.

"अब मैं बहुत खुश हूँ!" उस आदमी ने कहा.

"कोई कभी मेरे जितना खुश नहीं होगा!"

वे एक बड़े घर के सामने जाकर रुके.

कोको ने वहाँ के बड़े बगीचों को देखा.

उसने फव्वारे और ताल देखे.

"यह हमारा घर है," चाचा पॉल ने कहा.

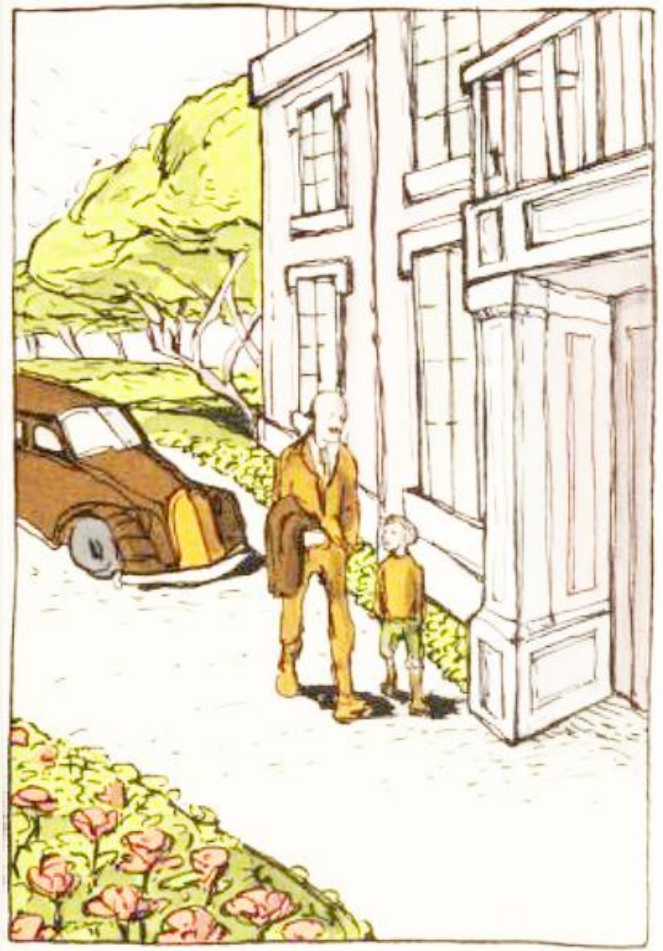

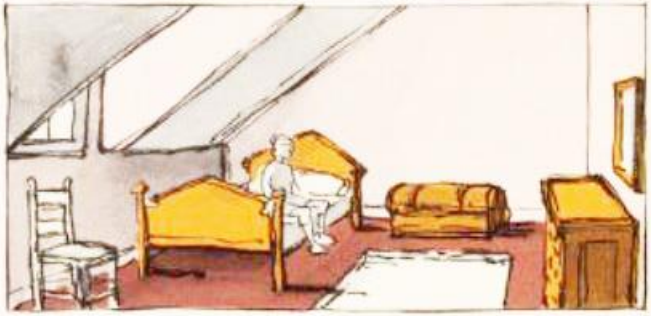

घर में कई कमरे थे.

"तुम अपने लिए कोई भी कमरा चुन लो," चाचा पॉल ने कहा.

कोको ने घर के ऊपर अपने लिए एक छोटा सा कमरा चुना.

"मुझे वो पसंद है," कोको ने कहा.

"नहीं, नहीं," चाचा पॉल ने कहा.

"वो नौकरों का कमरा है.

वो कमरा मेरे कोको के लिए सही नहीं रहेगा.

देखो, यह वो कमरा है जो जिसमें तुम्हें रहना चाहिए."

फिर चाचा पॉल ने कोको को एक बड़ा कमरा दिखाया.

उसमें मोटे कालीन थे और एक बड़ा सा पलंग था.

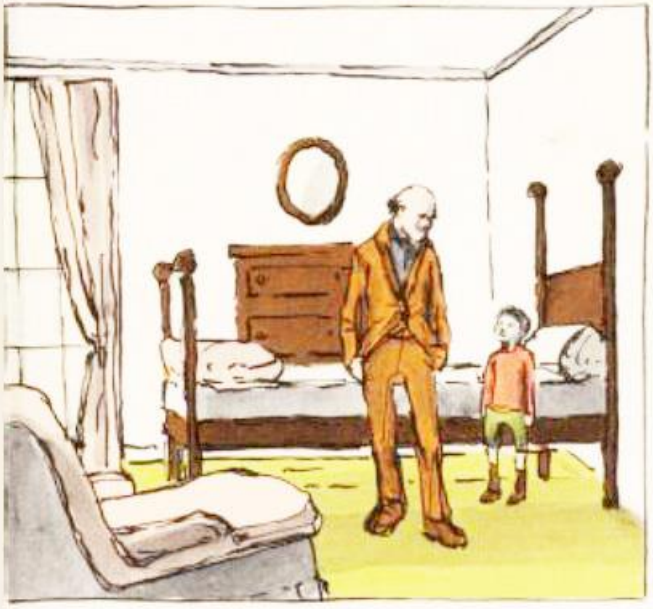

कोको ने खिड़की से बाहर देखा.

उसे एक सड़क दिखाई दी.

सड़क के दूसरी ओर पेड़ थे.

"मैं तुम्हें सबकुछ देना चाहता हूं," चाचा पॉल ने कहा.

"तुम क्या चाहते हो, कोको? मुझे बताओ."

"मैं नीचे पेड़ों की छांव में चलना चाहता हूँ," कोको ने कहा.

"हाँ, हाँ ज़रूर," चाचा पॉल ने कहा.

"किसी दिन तुम वो ज़रूर करोगे. लेकिन पहले मुझे यह बताओ कि तुम और क्या चाहते हो."

"हमारे शहर में कोई पेड़ नहीं था," कोको ने कहा. "इसलिये मैं यहाँ पर पेड़ों की छांव में चलना चाहता हूं."

चाचा पॉल हंसने लगे.

"तुम मेरी बात समझे नहीं," चाचा पॉल ने कहा.

"अब तुम अमीर हो. तुम जो चाहो वो खरीद सकते हो. बताओ, मैं तुम्हें क्या दूं?"

कोको ने कोई जवाब नहीं दिया.

"मुझे पता है," चाचा पॉल ने कहा.

"तुम्हें कपड़े चाहिए, आओ चलें."

वे बाजार गए और उन्होंने ढेर सारे कपड़े खरीदे.

उन्होंने बक्से भर-भरकर कपड़े खरीदे.

"मुझे बताओ कि तुम्हें और क्या चाहिए?" चाचा पॉल ने पूछा.

"और कुछ नहीं, आपका बहुत धन्यवाद," कोको ने कहा.

वे सड़क पर घूम रहे थे.

कोको ने दुकान की खिड़कियों में देखा.

उनमें से एक दुकान में उसने एक शंख देखा.

"क्या यह असली है?" कोको ने पूछा.

"हाँ," अंकल पॉल ने कहा.

"क्या तुम उसे पसंद करोगे?"

"नहीं, धन्यवाद," कोको ने कहा.

"मैं उसे इसलिए देख रहा था, क्योंकि वो बहुत बड़ा था."

लेकिन अगले दिन कोको को अपने कमरे में वो शंख मिला.

चाचा ने कोको को एक सरप्राइज देने के लिए वो शंख खरीद लिया था.

"तुम इसे अपने कान के पास रखो," चाचा पॉल ने कहा.

"क्या तुम्हें कुछ सुनाई दिया?"

"मुझे एक ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी," कोको ने कहा.

"वो समुद्र की आवाज़ की तरह होगी," चाचा पॉल ने कहा.

"क्या तुम कभी समुद्र तट पर गए हो?"

"नहीं," कोको ने कहा.

"फिर मैं तुम्हें वहाँ ले जाऊंगा," चाचा पॉल ने कहा.

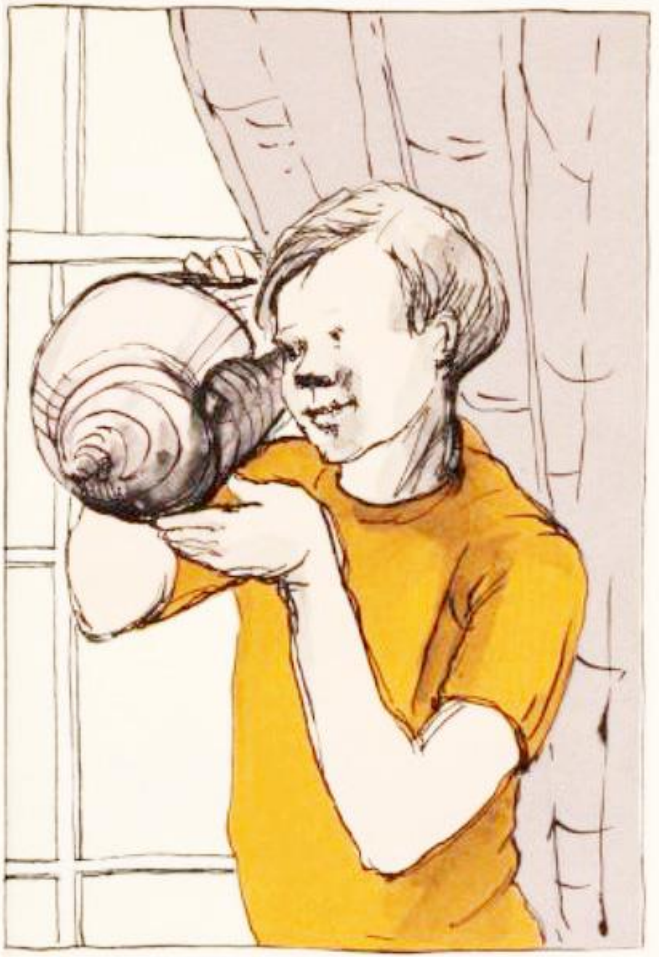

अगले दिन सुबह वे समुद्र के किनारे गए.

पानी की लहरों को किनारे पर आते देखकर कोको को समुद्र तट पसंद आया.

जिस होटल में वे रुके थे, उसे वो पसंद नहीं आया.

वो बहुत बड़ा था, और वहां बहुत सारे लोग थे.

लेकिन उन्होंने जल्द ही होटल छोड़ दिया.

वे समुद्र के किनारे गए और एक पहाड़ी पर रुके.

"नीचे देखो," चाचा पॉल ने कहा.

कोको ने देखा.

उसने वहां बहुत से घोड़ों को देखा.

उसने पहले जब कभी घोड़े देखे थे.

तब उसने उन्हें ठेले खींचते हुए ही देखा था.

लेकिन उसने ऐसे घोड़े कभी नहीं देखे थे.

ये घोड़े एकदम स्वतंत्र थे.

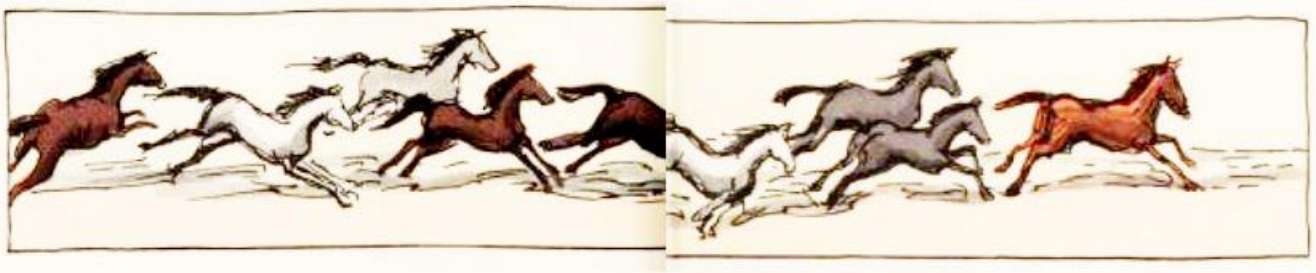

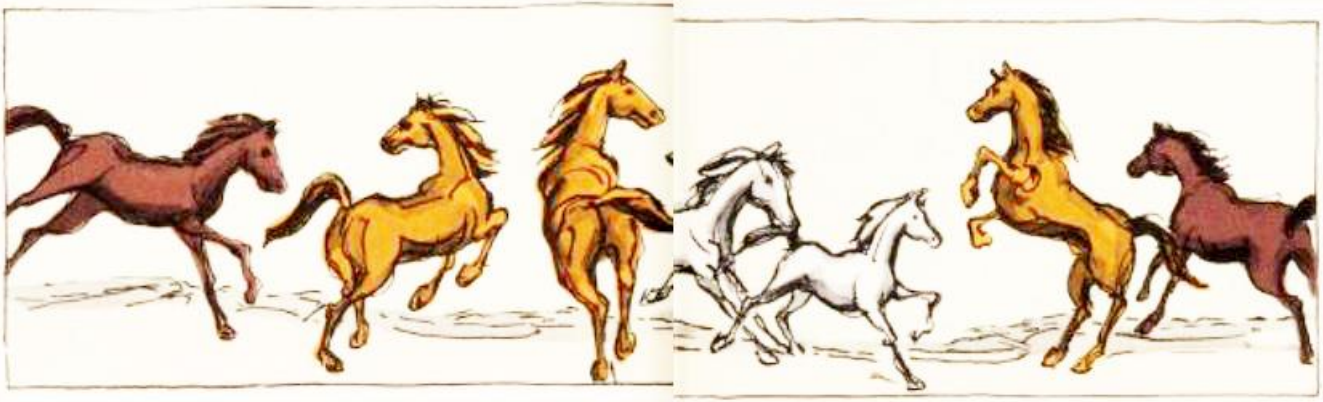

घोड़े, समुद्र के किनारे खेल रहे थे.

वे पानी के भीतर और बाहर भाग रहे थे.

"वे बहुत सुंदर हैं!" कोको ने कहा.

चाचा पॉल ने कोको से कहा, "वे जंगली घोड़े हैं.
वे समुद्र के किनारे ही रहते हैं."

"ज़रा उसे देखें!" कोको ने कहा.

"उस छोटे घोड़े को देखें. वो सबसे सुंदर है."

वो छोटा घोड़ा दूध की तरह सफेद था.

वो लहरों में खेल रहा था और अपने खुरों से छप-छप कर रहा था.

वो रेत में दौड़ रहा था.

कभी-कभी वो एक अन्य लम्बी पूँछ वाले बड़े सफेद घोड़े के पास दौड़ता था.

"वो बड़ा घोड़ा उसकी माँ होगी," कोको ने कहा.

"क्या आपको ऐसा नहीं लगता?"

"हाँ, मुझे भी वही लगता है," चाचा पॉल ने कहा.

वे काफी देर तक पहाड़ी पर बैठे रहे.

फिर कुछ लोग तट पर आए और तब घोड़े वहां से भाग गए.

घर के रास्ते में चाचा पॉल ने पूछा,

"क्या तुम्हें समुद्र के किनारा पसंद आया?"

"हाँ," कोको ने कहा.

"वहां पर घोड़े मुझे सबसे अच्छे लगे."

अगले दिन कोको दोपहर तक सोया रहा.

चाचा पॉल उसे जगाने आए.

"मैं दूर गया था," चाचा ने कहा. "मैं तुम्हारे लिए कुछ लाया हूँ, तुम उसे देखना."

"वो क्या है?" कोको ने पूछा.

"तुम्हें कल उसका पता चल जाएगा," चाचा पॉल ने कहा.

"आज तुम और क्या करना चाहते हो?"

कोको ने खिड़की से बाहर देखा.

उसने सड़क के किनारे पेड़ों को देखा.

"मैं वहाँ जाना चाहता हूँ," उन्होंने कहा.

"अच्छा," चाचा पॉल ने कहा.

"हम वहां पर पिकनिक करेंगे."

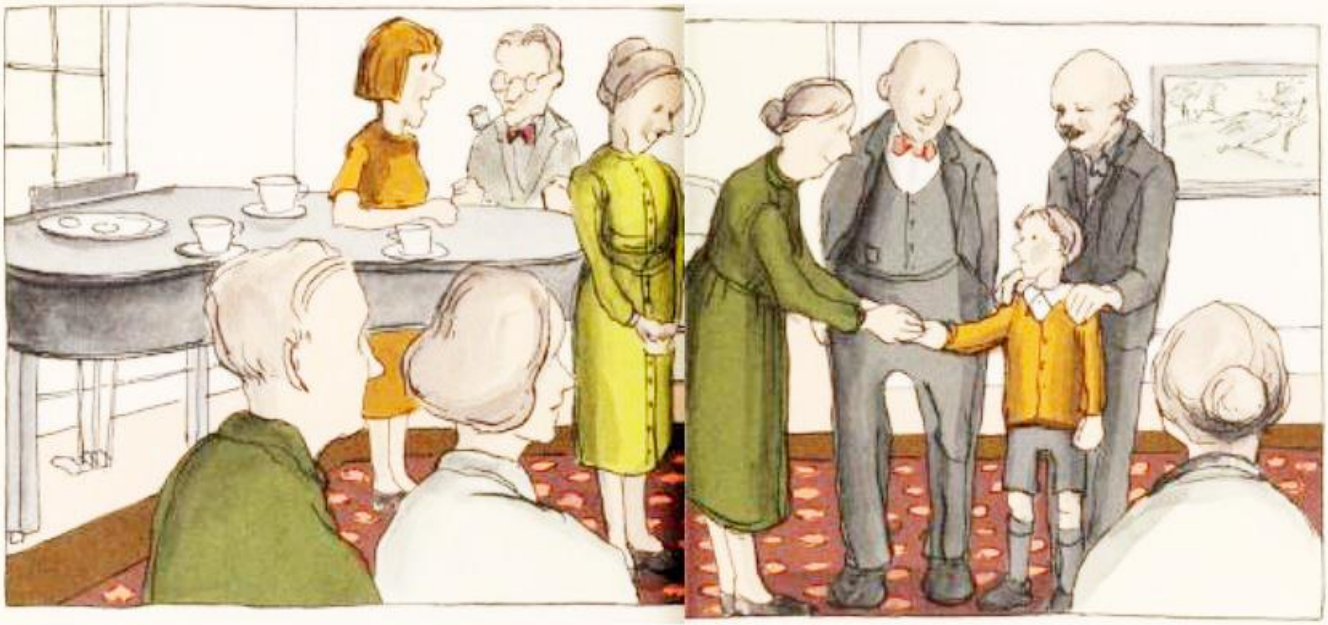

लेकिन वो पिकनिक का समय नहीं था.

बहुत से लोग घर में आए.

वे चाचा पॉल के दोस्त थे.

वे सभी कोको से मिलना चाहते थे.

कोको देर तक बैठा रहा.

फिर सुबह वो देर तक सोया.

चाचा पॉल ने उसे जगाया.

"अपने कपड़े पहन लो.

और जल्दी करो!" उन्होंने कहा.
"मेरे साथ आओ."

वे अस्तबल से आगे गए.

वे अस्तबल के पीछे एक बाड़े में गए.

कोको स्थिर खड़ा था.

उस बाड़े में एक घोड़ा था.

वो एक सफेद घोड़ा था.

वो वही छोटा घोड़ा था जिसे कोको ने समुद्र तट पर देखा था.

"कुछ लोगों ने उस घोड़े को मेरे लिए पकड़ा है," चाचा पॉल ने कहा.

"वे अभी-अभी उसे यहां पर एक ट्रक में लाए हैं. कोको, क्या तुम हैरान हो?"

कोको ने घोड़े को देखा.

उसने अपने चाचा की ओर देखा.

कोको ने कहा, "आपने उस घोड़े को चोट पहुँचाई है!"

"क्या?" चाचा पॉल ने कहा.

"उसकी गर्दन पर खून लगा है," कोको ने कहा.

"पकड़ने वाले लोगों ने उसके गले में रस्सी डाली थी," चाचा पॉल ने कहा.

"उससे गले में एक निशान बन गया है. वो जल्द ही ठीक हो जाएगा. कोको, वो घोड़ा तुम्हारा है."

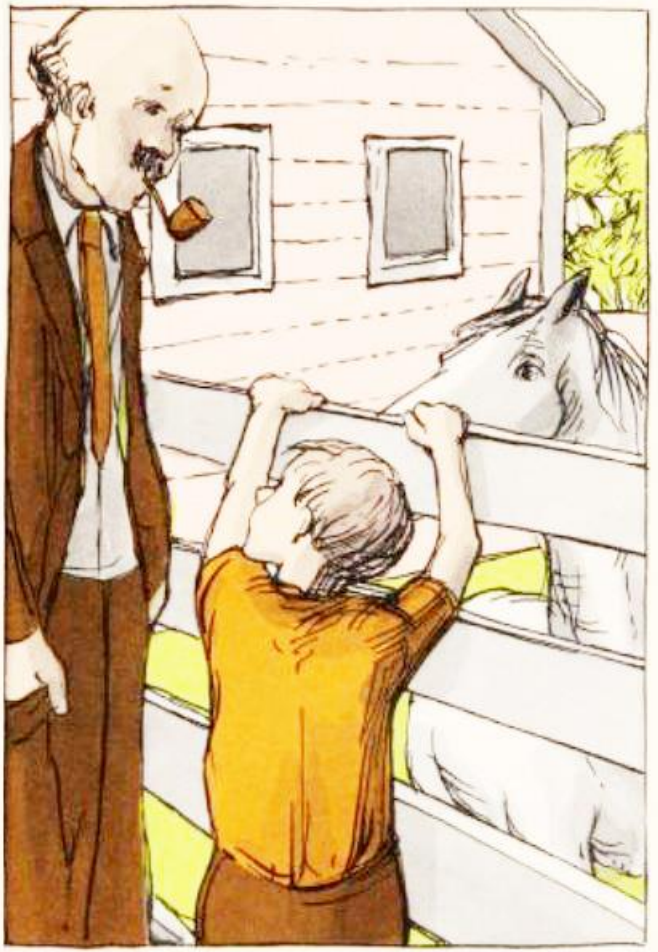

"नहीं!" कोको ने कहा.

"लेकिन तुमने उसे सबसे अधिक पसंद किया था," चाचा पॉल ने कहा.

"मैंने यह कभी नहीं कहा कि मैं उसे लेना चाहता था," कोको ने कहा.

"आप उस घोड़े को उसके घर यानि समुद्र से दूर ले गए हैं. आप उसे उसकी माँ से दूर ले गए हैं. वो बहुत डर गया है. वो रो रहा है."

"घोड़े रोते नहीं हैं," चाचा पॉल ने कहा.

"हाँ, घोड़े भी रोते हैं," कोको ने कहा.

"क्या आप नहीं देख सकते?"

"तुम एक मूर्ख लड़के हो," चाचा पॉल ने कहा.

उसके बाद कोको घर की ओर भाग गया.

उस रात कोको ने एक थैले में कुछ कपड़े रखे.

उसने रात के खाने से कुछ रोटी बचा कर रखी थी.

उसने उसे भी बैग में रखा.

उसने बैग को उठाया और वो बाहर निकला.

वो अस्तबल के पीछे वाले बाड़े के पास गया.

छोटा घोड़ा वहीं था.

छोटा घोड़ा एक उदास सफेद भूत की तरह लग रहा था.

कोको ने बाड़े का गेट खोल दिया.

तभी कोई कोको के पीछे आया.

उन्होंने पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

वो चाचा पॉल थे.

चाचा पॉल ने पूछा, "तुमने गेट क्यों खोला?"

"जिससे वो छोटा घोड़ा अपने घर जा सके," कोको ने कहा.

"वो अपने घर का रास्ता नहीं खोज पाएगा," चाचा पॉल ने कहा.

फिर चाचा पॉल ने बाड़े का गेट बंद कर दिया.

चाचा पॉल ने अपना हाथ कोको के बैग पर रखा.

"यह क्या है?" उन्होंने पूछा.

"कुछ कपड़े और रोटी का एक टुकड़ा," कोको ने कहा.

"क्या तुम मुझे छोड़कर जा रहे थे?" चाचा पॉल ने पूछा.

"हाँ," कोको ने कहा.

"रोज़ा के साथ रहने के लिए, अगर वो मुझे अपने साथ रहने देंगी."

"वहां जाने का रास्ता लंबा है," चाचा पॉल ने कहा.

"आज रात तुम यहीं रुको. हम कल सुबह इसके बारे में बात करेंगे."

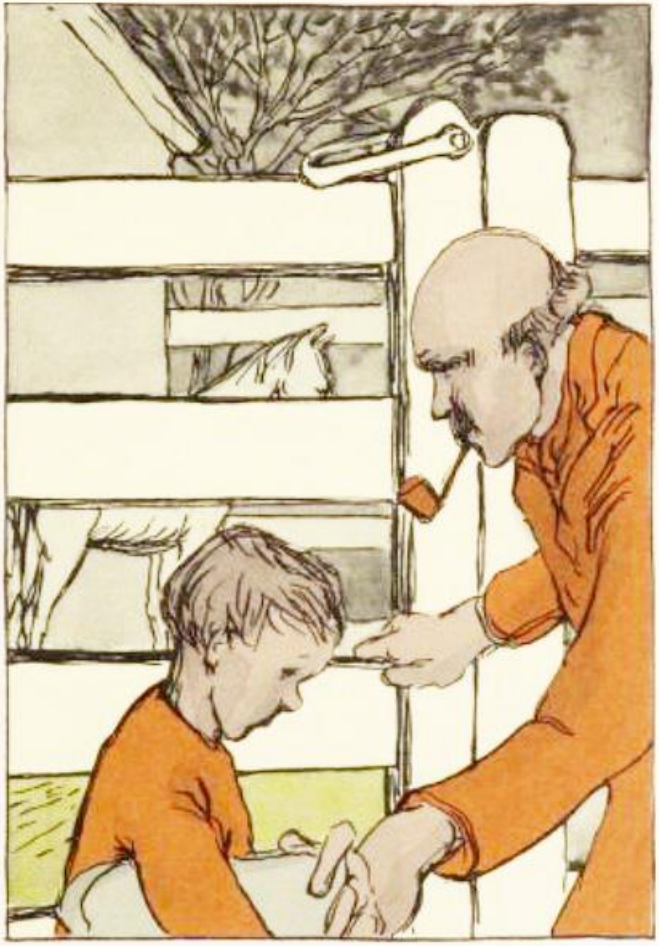

सुबह कोको ने घर के सामने एक ट्रक देखा.

"आओ," चाचा पॉल ने कहा.

"हम छोटे घोड़े को उसके घर ले जा रहे हैं."

वे कार में सवार हुए और वो सड़क पर ट्रक के पीछे चले.

वो समुद्र तक उसके पीछे-पीछे चले.

वे पहाड़ी पर चढ़े और वहां से देखते रहे.

ट्रक समुद्र के किनारे आकर रुका.

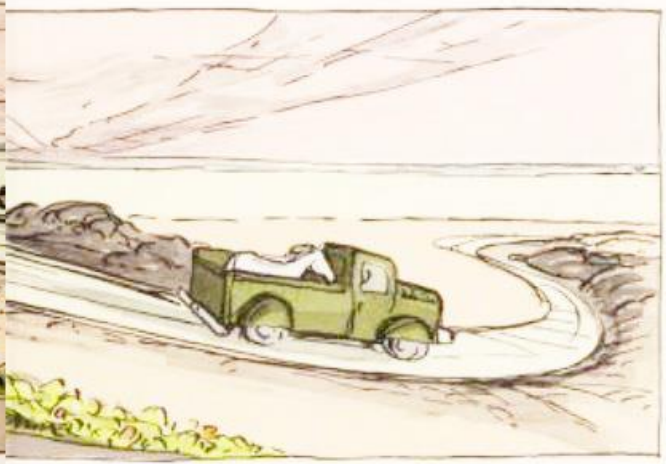

छोटे घोड़े को छोड़ दिया गया, और फिर वहां से ट्रक दूर चला गया.

छोटा घोड़ा समुद्र तट पर अकेला था.

उसने अपना सर हिलाया.

उसने कुछ कदम उठाए.

फिर वो समुद्र में अंदर और बाहर दौड़ा.

उसके बाद अन्य घोड़े समुद्र तट के किनारे आए.

उन्होंने उसके चारों ओर एक घेरा बनाया.

उनमें लम्बी पूंछ वाला एक बड़ा सफेद घोड़ा भी था.

"माँ!" कोको ने कहा.

फिर घोड़े दौड़ने लगे.

उन्होंने रेत और पानी को लात मारी.

वे समुद्र तट पर तब तक भागे जब तक कि वे दृष्टि से ओझल नहीं हो गए.

फिर कोको और चाचा पॉल घर चले गए.

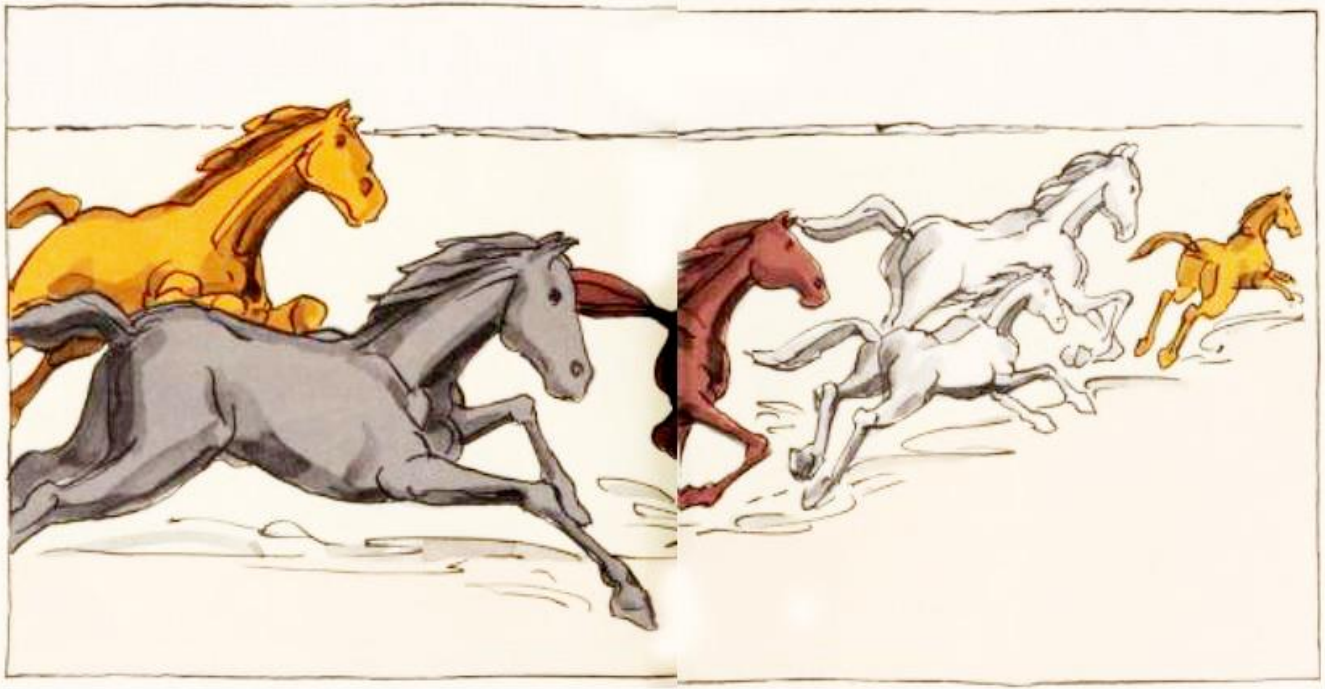

"क्या तुम अभी भी रोजा के पास जाना चाहते हैं?" चाचा पॉल ने पूछा.

"वो शायद मुझे न चाहें," कोको ने कहा.

"लेकिन मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ," चाचा पॉल ने कहा.

चाचा पॉल ने पूछा, "क्या तुम पेड़ों के नीचे चलना चाहोगे?"

"हाँ," कोको ने कहा.

"तो जाओ," चाचा पॉल ने कहा.

कोको जाने को शुरू हुआ लेकिन फिर वो रुक गया.

उसने पूछा, "क्या आप भी मेरे साथ नहीं चलेंगे?"

"क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ चलूं?" चाचा पॉल ने पूछा.

"हाँ," कोको ने कहा.

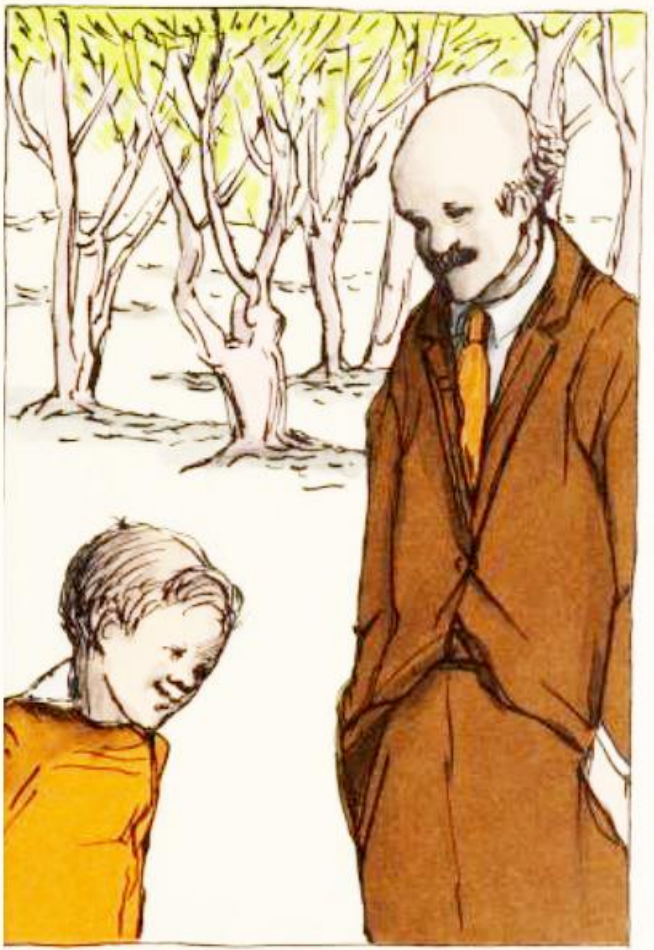

वे पेड़ों के नीचे चले.

वहाँ ठंडक और शांति थी.

पत्ते थोड़े हिले, और उन्हें आकाश दिखाई दिया.

अब कोको खुश होने लगा.

उसे लगा कि अब चाचा पॉल भी खुश थे.

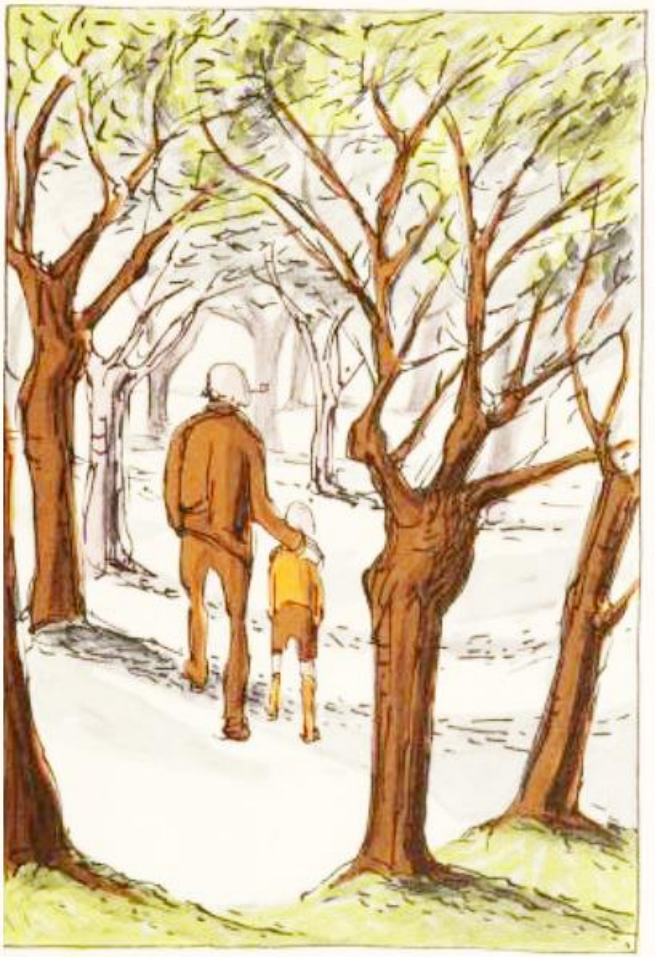

अंत